TLPS | Teaching Learning Practices Survey

Anchored by LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future

Supported by TATA TRUSTS

टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे - राजस्थान

भारत में एफएलएन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को सशक्त करने के लिए एक अध्ययन

2025 | सारांश

Implemented with

Ei

Centre for microFinance

TLPS 2025

टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025, राजस्थान

दिसम्बर 2025

सहयोग: टाटा ट्रस्ट

क्रियान्वयन में भागीदार: सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस (सीएमएफ), लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ)

मूल्यांकन भागीदार: एजुकेशनल इनिशियटिव (ईआई)

सरकारी भागीदार: राजस्थान सरकार

इस रिपोर्ट में उपयोग में लाए गए समस्त चित्र लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन एवं सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस द्वारा लिए गए हैं।

डिजाइन एवं सम्पादन: न्यू कन्सेप्ट इनफॉर्मेशन सिस्टम्स, नई दिल्ली।

आवरण की डिजाइन: आकाश भगत

LLF वेबसाइट **https://languageandlearningfoundation.org/** पर यह रिपोर्ट उपलब्ध है।
इस रिपोर्ट के किसी भी अंश का उपयोग उचित अनुमोदन के साथ अव्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

सुझावित संदर्भ:

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन. (2025). *टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025. राजस्थान*
https://languageandlearningfoundation.org/teaching-learning-practices-survey/Rajasthan

निम्न संस्था द्वारा प्रकाशित:
लैंग्वेज एण्ड लर्निंग फाउण्डेशन
पहला तल, ब्लाक बी, 8, गुरु रविदास मार्ग
बालाजी एस्टेट, कालकाजी
नई दिल्ली-110019

कार्यकारी सारांश

परिचय

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी - एनईपी) 2020 ने देश की शिक्षा पद्धति में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमेरेसी या एफएलएन) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस फोकस को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- बुनियादी स्तर (एनसीएफ-एफएस) 2022 ने और भी मजबूत किया है। इस विजन को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने स्पष्ट अधिदेश के साथ निपुण भारत मिशन शुरू किया है। ये अधिदेश है- 2026-27 तक सभी बच्चों को सार्वभौमिक एफएलएन का लक्ष्य प्राप्त करना है। इससे सभी राज्यों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) को और बेहतर बनाने के प्रयासों को बढ़ावा मिला है।

राजस्थान सरकार बच्चों के सीखने की प्रगति का पता लगाने के लिए प्रखर राजस्थान अभियान के माध्यम से सीखने के परिणामों का व्यापक स्तर पर मूल्यांकन कर रही है। यह पहल राज्य में प्रारंभिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार की दिशा में एक स्वागत योग्य कदम है।

टीएलपीएस 2025 के बारे में

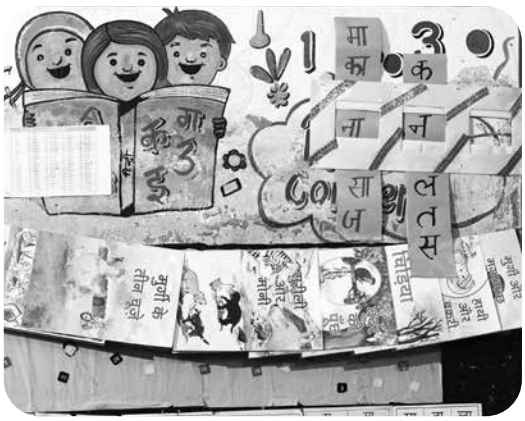

कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं पर व्यवस्थित साक्ष्य देने के लिए टीएलपीएस 2025 की परिकल्पना की गई थी। प्रारंभिक कक्षाओं के विविध संदर्भों में इन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की जाँच करते हुए सर्वे यह दर्शाता है कि बच्चों की सीखने की सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और अकादमिक मदद से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में क्या परिवर्तन हो रहा है। यह सर्वे अवलोकित कक्षाओं में वर्तमान शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की स्थिति को दिखाता है और साथ ही यह भी बताता है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर किए जा रहे प्रयासों से कक्षाओं में किस हद तक शैक्षणिक बदलाव हो रहे हैं और किन क्षेत्रों में अतिरिक्त सुधार की आवश्यकता है।

राजस्थान में यह सर्वे नवंबर 2024 में किया गया था। इस सर्वे में दो जिलों (सीकर और बांसवाडा) के 100 स्कूलों को शामिल किया गया था।

निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

इस सर्वे में निम्न विषयों पर निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए हैं- कक्षा में सीखने का वातावरण, पाठ योजना और प्रस्तुतीकरण, भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ और शिक्षकों एवं बच्चों की कक्षा गतिविधियों के लिए समय विभाजन। यह एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर उनकी धारणाएँ भी प्रस्तुत करता है।

कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं और शिक्षा प्रणाली स्तरीय परिवर्तन के लिए प्राथमिकताएँ

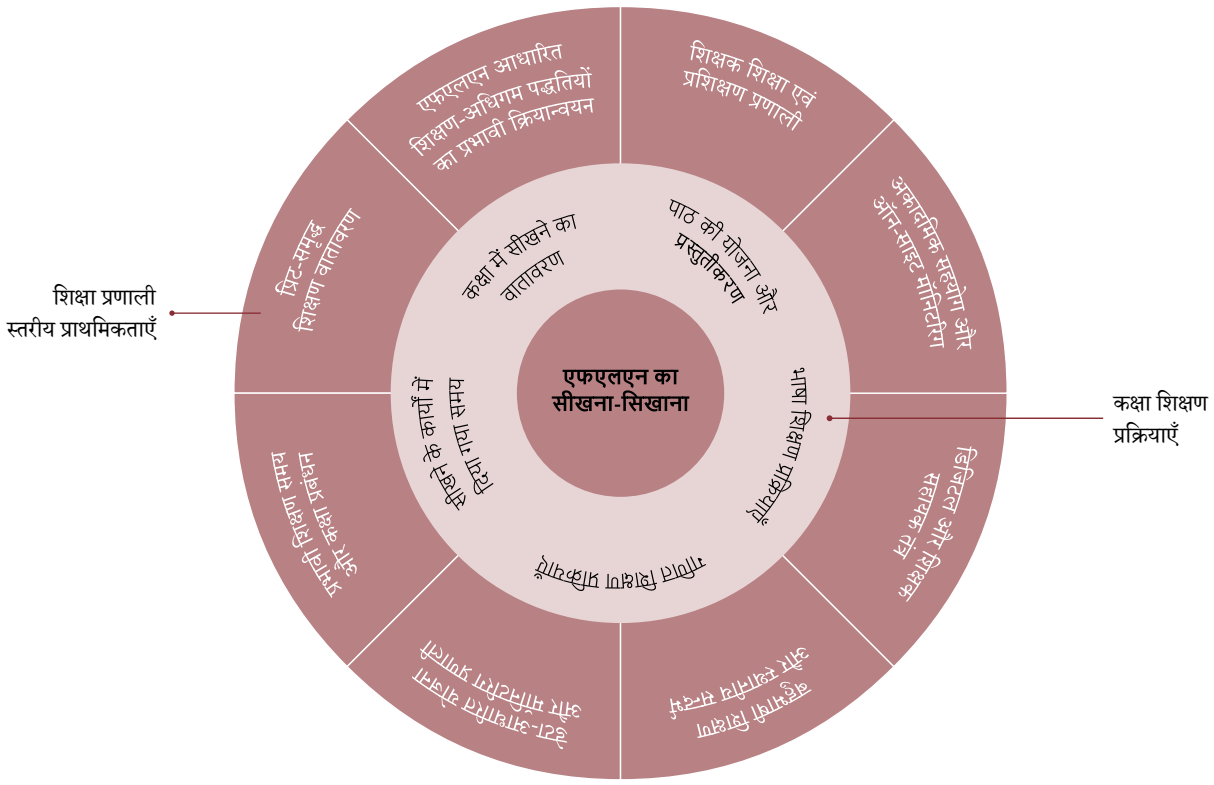

इस रिपोर्ट में दो प्रकार की अनुशंसाएँ शामिल हैं:

- **कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं को सशक्त करने के लिए अनुशंसाएँ** जो सीधे तौर पर सर्वे के मुख्य निष्कर्षों पर आधारित हैं। इन्हें अगले खंड में कक्षा-स्तरीय निष्कर्षों के साथ दिया गया है।
- **शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन संबंधी अनुशंसाएँ** जो प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को लागू करने और उनके स्थायित्व में मदद करेंगीं। इन अनुशंसाओं को कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं से संबंधित अनुशंसाओं के बाद के खंड में प्रस्तुत किया गया है।

कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के लिए निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

कक्षा में सीखने का वातावरण

सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- कक्षा का भौतिक वातावरण, शिक्षक और बच्चों के संबंध, बच्चों को भागीदारी के अवसर और बच्चों की घर की भाषा का उपयोग।

मुख्य निष्कर्ष

अवलोकित कक्षाओं में से अधिकतर कक्षाओं में प्रिंट-समृद्ध सामग्री प्रदर्शित थी और बच्चों की आँखों के स्तर पर लगाई गई थी।

80% कक्षाओं में बैठने की व्यवस्था पंक्तिबद्ध थी। अवलोकन के दौरान बहुत कम कक्षाओं में बैठक व्यवस्था में बदलाव किया गया था।

लगभग दो-तिहाई कक्षाओं में बच्चे अधिकतर शांत बैठे हुए थे और उन्हें खुलकर बोलने, शिक्षक से बातचीत करने या एक-दूसरे से सीखने के बहुत कम अवसर मिले।

हालाँकि 76% शिक्षक बच्चों की घर की भाषा जानते थे, लेकिन केवल 15% शिक्षकों ने ही बच्चों की भागीदारी और समझ को बढ़ाने के लिए इसका भरपूर उपयोग किया।

अनुशंसाएँ

सर्वे में पाया गया है कि प्रिंट-समृद्ध सामग्री बच्चों की पहुँच में थी। अब यह सुनिश्चित करना जरुरी है कि शिक्षण के दौरान इसका सक्रिय और सार्थक रूप से उपयोग किया जाए ताकि सीखने में सहयोग मिल सके।

शिक्षकों को बच्चों के बैठने की लचीली व्यवस्था और समूह बनाकर पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि बच्चों में पारस्परिक विचार विमर्श और सहयोग को बढ़ावा मिले।

प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षक और बच्चों के संबंधों को मजबूत करने की तुरंत आवश्यकता है ताकि बच्चे अधिक आत्मविश्वासी बन सकें, चर्चा में भाग ले सकें और सीखने की प्रक्रिया में सार्थक रूप से जुड़ सकें।

बच्चों के घर की या सबसे परिचित भाषा का नियमित और सोच-समझकर उपयोग करना बच्चों के आत्मविश्वास, भागीदारी और समझ बढ़ाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

पाठ योजना और प्रस्तुतीकरण

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों द्वारा बच्चों को स्पष्ट निर्देश देना, बच्चों के स्वतंत्र कार्य का अवलोकन और मॉनिटरिंग करना, लेखन कार्यों पर फीडबैक देना, समझ की जाँच के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करना और कक्षा में सीखने के विभिन्न स्तरों के अनुसार विभेदीकृत शिक्षण (डिफरेंशिएटेड इंस्ट्रक्शन) का उपयोग करना।

मुख्य निष्कर्ष

अधिकांश शिक्षकों (69%) ने समूह या व्यक्तिगत कार्य के दौरान बच्चों के काम की नियमित मॉनिटरिंग नहीं की।

कुछ शिक्षकों (25%) ने बच्चों का लिखित कार्य तो देखा, लेकिन बहुत कम शिक्षकों ने इस प्रकार का सार्थक फीडबैक या मार्गदर्शन दिया, जिससे बच्चे अपनी गलतियाँ सुधार सकें।

आधे से अधिक शिक्षकों ने पूरी कक्षा से एक साथ सवाल पूछे, जिसका परिणाम यह हुआ कि बच्चों ने सामूहिक रूप से उत्तर दिए। बहुत कम शिक्षकों (22%) ने अलग-अलग तरीकों से प्रत्येक बच्चे की समझ की जाँच की।

अवलोकन के दौरान यह पाया गया कि एक-तिहाई (37%) शिक्षकों ने अलग-अलग सीखने के स्तर वाले बच्चों के लिए विभेदीतकृत शिक्षण रणनीतियों का उपयोग किया।

अनुशंसाएँ

नियमित और उद्देश्यपूर्ण अवलोकन के माध्यम से शिक्षकों को बच्चों की त्रुटियों की पहचान करना, शिक्षण को समायोजित करना और समय पर बच्चों की मदद करनी चाहिए।

बच्चों के काम की नियमित जाँच, गलतियों की स्पष्ट पहचान और सुधार के लिए सरल उपायों के माध्यम से फीडबैक की प्रक्रिया को मजबूत करना आवश्यक है।

पाठों के दौरान बच्चों की समझ की जाँच के लिए सरल और विविध तरीकों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि प्रत्येक बच्चे से उनकी सोच को समझाने के लिए कहना या बच्चों को अपनी सीख प्रदर्शित करने के लिए एक छोटा सा कार्य देना।

सभी विद्यार्थियों को सहयोग प्रदान करने के लिए, शिक्षकों को स्पष्ट रणनीतियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि लचीले समूह बनाना, स्तर-आधारित समूहों में मार्गदर्शित अभ्यास कराना और नियमित पाठों के दौरान सहायक कार्य (स्कैफफोल्डेड टास्क) देना।

उचित पहचान के बाद, सीखने में कठिनाई का सामना कर रहे बच्चों को अतिरिक्त ध्यान और सहायता प्रदान करना आवश्यक है।

भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- चर्चा के दौरान बच्चों के पूर्व ज्ञान का उपयोग, खुले छोर वाले प्रश्न पूछना, डिकोडिंग सिखाने के लिए अलग-अलग रणनीतियों का उपयोग, पढ़कर सुनाते (रीड अलाउड) समय समझ आधारित रणनीतियों का उपयोग, बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढने के मौके देना तथा अभिव्यक्तिपूर्ण लेखन के लिए स्पष्ट संकेत प्रदान करना।

मुख्य निष्कर्ष

मौखिक भाषा विकास सम्बन्धी गतिविधियों के दौरान बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल करना और खुले छोर वाले प्रश्नों का उपयोग बहुत सीमित था। इससे बच्चों को सोच-विचार करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने का बहुत कम अवसर मिला।

डिकोडिंग का शिक्षण व्यवस्थित नहीं था। यह या तो केवल अक्षर या शब्द लिखने पर आधारित था अथवा ध्वनि-प्रतीक संबंध और शब्द जोड़ने (ब्लेंडिंग) को सशक्त करने के लिए केवल एक ही गतिविधि पर आधारित था।

हालांकि आधे से अधिक कक्षाओं (56%) में बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अभ्यास करने का अवसर मिला, लेकिन इनमें से अधिकांश मामलों में शिक्षकों ने इस दौरान बच्चों को मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान नहीं किया।

61% शिक्षकों ने इस प्रकार का लेखन कार्य दिया, जिसमें बच्चों को ब्लैकबोर्ड या पाठ्यपुस्तक से नकल करना या केवल अक्षर और शब्द लिखना शामिल था।

अनुशंसाएँ

मौखिक भाषा की गतिविधियों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए जरुरी है कि विषयों और चर्चाओं को संदर्भों और अनुभवों से जोड़ा जाए। बच्चों से अनुमान लगाने, सोचने और निष्कर्ष निकालने के लिए कहा जाए। इसके साथ ही उन्हें खुले छोर वाले प्रश्नों के उत्तर में खुलकर बोलने का अवसर प्रदान किया जाए।

डिकोडिंग को अधिक व्यवस्थित तरीके से सिखाने की आवश्यकता है। इसमें ऐसी कई गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए, जो ध्वनि और अक्षर के संबंध को अलग-अलग तरीकों से मजबूत करें। इसमें सरल शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग भी शामिल है।

बच्चों को शिक्षक के मार्गदर्शन में छोटे समूहों या जोड़ों में और साथ ही स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

लेखन गतिविधियाँ केवल देखकर लिखने तक सीमित नहीं रहें, इसके लिए बच्चों को स्वयं सोचकर लिखने तथा विचारों और भावनाओं को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने के लिए सार्थक अवसर दिया जाना चाहिए।

गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों और बच्चों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग करना, गणित के कार्यों को बच्चों को स्वतंत्र रूप से करने के अवसर प्रदान करना, गणितीय अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए बच्चों के वास्तविक-जीवन के अनुभवों का उपयोग करना तथा शिक्षकों द्वारा 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछना।

मुख्य निष्कर्ष

दो-तिहाई (67%) शिक्षकों ने किसी भी टीएलएम का उपयोग नहीं किया। इसी प्रकार अधिकांश कक्षाओं में बच्चों ने भी टीएलएम का बिल्कुल भी उपयोग नहीं किया।

अधिकतर शिक्षकों (90%) ने गणितीय अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझाने के लिए वास्तविक-जीवन के उदाहरणों का उपयोग नहीं किया गया या कभी-कभार किया गया।

52% कक्षाओं में बच्चों को स्वतंत्र रूप से अभ्यास करने के अवसर दिए गए, लेकिन केवल कुछ ही कक्षाओं में शिक्षकों ने बच्चों का अवलोकन और मार्गदर्शन किया।

शिक्षकों ने केवल एक-तिहाई कक्षाओं में 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछे।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का अधिकाधिक, नियमित और बाल-केन्द्रित तरीके से उपयोग करने की अत्यंत आवश्यकता है। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी और को करते हुए देखने के बजाय बच्चों को स्वयं करके देखने और अवधारणाओं को समझने के पर्याप्त अवसर मिलें।

गणितीय अवधारणाओं को सिखाते और उनका अभ्यास कराते समय परिचित और बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे बच्चे दैनिक जीवन में गणित की प्रासंगिकता समझने और व्यावहारिक समस्या-समाधान के कौशल विकसित कर सकेंगे।

स्वतंत्र अभ्यास के दौरान शिक्षकों को बच्चों के काम की सक्रिय रूप से मॉनिटरिंग करने और समय पर मार्गदर्शन और फीडबैक देने की आवश्यकता होती है ताकि अभ्यास यांत्रिक दोहराव से आगे बढ़कर वैचारिक समझ और प्रवाह को मजबूत कर सके।

शिक्षकों को 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछने चाहिएँ। इससे बच्चे अपने विचारों को स्पष्ट करने, अपने उत्तरों के लिए तर्क देने और अपनी रणनीतियों पर चिंतन करने में सक्षम हो पाएँगे। इससे बच्चों में रटने पर आधारित सीखने को बढ़ावा देने के बजाय गहरी समझ और तार्किक सोच विकसित होगी।

सीखने के कार्यों पर समय

सर्वे के दौरान विभिन्न कक्षा गतिविधियों में शिक्षकों और बच्चों द्वारा बिताए गए समय पर भी ध्यान दिया गया था।

मुख्य निष्कर्ष

बच्चे कुल कक्षा समय के 28% समय के दौरान 'सीखने के कार्य में शामिल नहीं' (ऑफ-टास्क) रहे। जब बच्चे 'सीखने के कार्य में शामिल' (ऑन-टास्क) थे, तो भी उनका अधिकांश समय यांत्रिक या दोहरान वाले कार्यों में ही व्यतीत हुआ।

शिक्षकों का दो-तिहाई से अधिक समय (67%) शिक्षक-केन्द्रित गतिविधियों में व्यतीत हुआ।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों को सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण और शिक्षार्थी-केन्द्रित अभ्यास के बीच बेहतर संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

साथ ही, शिक्षकों को स्वतंत्र तथा समूह आधारित कार्यों की योजना अधिक सोच-समझकर बनानी चाहिए और उनका प्रभावी प्रबंधन करना चाहिए, विशेष रूप से बहु-कक्षा शिक्षण परिस्थितियों में, जहाँ शिक्षक का ध्यान एक से अधिक कक्षाओं में बँटा हुआ रहता है।

अन्य निष्कर्ष

- शिक्षकों में एफएलएन लक्ष्यों और अधिगम प्रतिफलों के प्रति गहरी जागरूकता पाई गई थी।
- 91% शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने पिछले एक साल में एफएलएन पर आधारित प्रशिक्षण में भाग लिया है।
- सर्वे में शामिल 88% शिक्षकों ने बताया कि उन्हें अकादमिक सहयोग प्राप्त होता है। यद्यपि केवल 19% शिक्षकों ने कहा कि उन्हें ये सहयोग नियमित रूप से प्राप्त होता है।

शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन के लिए अनुशंसाएँ

यह खंड उन महत्वपूर्ण प्रमुख प्रणालीगत पहलुओं को रेखांकित करता है, जिन्हें सशक्त करना आवश्यक है। इससे पिछले खंड में वर्णित कक्षा-स्तरीय परिवर्तनों को प्रभावी रूप से लागू और सतत बनाए रखा जा सकेगा।

एफएलएन के लिए नीतिगत प्राथमिकता को विस्तारित करना

राज्य में एफएलएन को शिक्षा सुधार के केंद्रीय लक्ष्य के रूप में निरंतर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। कक्षा 1 और 2 के साथ-साथ कक्षा 3 से 5 तक भी बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के कौशलों के सुदृढ़ीकरण पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है, ताकि प्रारंभिक कक्षाओं में अर्जित सीखने के कौशल आगे की कक्षाओं में भी स्थिर और विकसित हो सकें।

इसके अतिरिक्त, एफएलएन के दृष्टिकोण को केवल पढ़ने-लिखने और गणना तक सीमित न रखते हुए इसे समझ, तार्किक सोच, मौखिक अभिव्यक्ति और समस्या-समाधान क्षमता से जोड़ना आवश्यक है।

शिक्षक शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रणाली का पुनर्संरचना

राज्य की शिक्षक शिक्षा प्रणाली में एफएलएन केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को अधिक व्यवस्थित रूप से शामिल करने की आवश्यकता है। डीआईईटी, एससीईआरटी तथा अन्य प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कक्षा-आधारित, गतिविधि-आधारित और बहुभाषी शिक्षण रणनीतियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षण को एक बार की गतिविधि के बजाय सतत व्यावसायिक विकास (कंटीन्यूअस प्रोफेशनल डेवलपमेंट – सीपीडी) की प्रक्रिया के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। इसके अंतर्गत नियमित प्रशिक्षण, सहकर्मी-आधारित सीखने के मंच, कक्षा-अवलोकन आधारित फीडबैक और डिजिटल शिक्षण संसाधनों का उपयोग शामिल किया जा सकता है।

अकादमिक सहयोग और ऑन-साइट मेंटरिंग को सशक्त करना

विद्यालय स्तर पर शिक्षकों को निरंतर अकादमिक सहयोग प्रदान करने के लिए खंड एवं संकुल स्तर के अकादमिक कार्यकर्ताओं की भूमिका को सशक्त किया जाना आवश्यक है। विद्यालय अवलोकन के दौरान इन अधिकारियों द्वारा केवल निरीक्षण करने के बजाय शिक्षकों को व्यावहारिक मार्गदर्शन, मेंटरिंग और कक्षा-स्तरीय समाधान प्रदान करने पर बल दिया जाना चाहिए। मध्य-स्तरीय अकादमिक अधिकारियों को गैर-शैक्षणिक प्रशासनिक कार्यों से यथासंभव मुक्त कर उन्हें शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता सुधार पर केंद्रित करने की आवश्यकता है।

प्रभावी शिक्षण समय और कक्षा प्रबंधन को सुनिश्चित करना

विद्यालय अवलोकनों के दौरान यह पाया गया कि कई विद्यालयों में प्रभावी शिक्षण समय का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता। इसलिए विद्यालयों में निर्धारित समय-तालिका के अनुसार पर्याप्त शिक्षण समय सुनिश्चित करने और कक्षा में समय एवं कार्य प्रबंधन को सशक्त करने की आवश्यकता है।

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कक्षा शिक्षण के लिए पर्याप्त समय सुनिश्चित करना तथा कक्षा गतिविधियों को व्यवस्थित रूप से संचालित करना आवश्यक है।

कक्षा में प्रिंट-समृद्ध शिक्षण वातावरण को प्रभावी बनाना

विद्यालयों में उपलब्ध प्रिंट-सामग्री (चार्ट, शब्द-दीवार, चित्र आदि) को केवल सजावटी तत्व के रूप में प्रदर्शित करने के बजाय उन्हें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बनाया जाना चाहिए। इसके लिए यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि कक्षा में उपलब्ध सामग्री बच्चों की पहुँच और दृष्टि स्तर पर हो तथा शिक्षण गतिविधियों के दौरान उनका नियमित उपयोग किया जाए। एफएलएन-आधारित शिक्षण सामग्री और गतिविधि-आधारित संसाधनों की उपलब्धता भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

एफएलएन आधारित शिक्षण-अधिगम पद्धतियों का प्रभावी कार्यान्वयन

कक्षा शिक्षण में गतिविधि-आधारित शिक्षण, स्तरानुसार शिक्षण तथा कहानी-आधारित शिक्षण जैसे दृष्टिकोणों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। एफएलएन किट, कहानी पुस्तकों तथा अन्य शिक्षण-सहायक सामग्रियों का उपयोग नियमित रूप से किया जाना चाहिए ताकि बच्चों की सहभागिता और अवधारणात्मक समझ में वृद्धि हो सके।

डिजिटल प्लेटफॉर्म और शिक्षक सहायता तंत्र को सशक्त करना

शिक्षकों को तकनीकी सहायता प्रदान करने तथा उनके व्यावसायिक विकास को समर्थन देने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म और शिक्षक ऐप का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए। इन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षण संसाधन, शिक्षण सुझाव, फीडबैक और तकनीकी सहायता प्रदान की जा सकती है।

बहुभाषी शिक्षण और स्थानीय संदर्भ का समावेशन

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय भाषाओं और बोलियों का व्यापक उपयोग होता है। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की घर की भाषा या स्थानीय भाषा को शिक्षण प्रक्रिया में समाहित करने से उनकी समझ, आत्मविश्वास और कक्षा सहभागिता में वृद्धि हो सकती है। इस दिशा में शिक्षकों को बहुभाषी शिक्षण रणनीतियों के उपयोग के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

डेटा-आधारित योजना और निगरानी प्रणाली को मजबूत करना

विद्यालय अवलोकन, शिक्षक प्रशिक्षण और बच्चों के सीखने के परिणामों से संबंधित डेटा का उपयोग राज्य, जिला और खंड स्तर पर साक्ष्य-आधारित योजना एवं निर्णय-निर्माण के लिए किया जाना चाहिए। डिजिटल मॉनिटरिंग प्रणालियों के माध्यम से कक्षा शिक्षण की गुणवत्ता की नियमित समीक्षा और सुधार की प्रक्रिया को संस्थागत रूप दिया जा सकता है।

उपरोक्त प्रणाली-स्तरीय अनुशंसाएँ राजस्थान में प्रारंभिक कक्षाओं के शिक्षण-अधिगम को अधिक प्रभावी, सहभागितापूर्ण और परिणामोन्मुख बनाने में सहायक होंगी। इन अनुशंसाएँ का उद्देश्य राज्य की शिक्षा प्रणाली को इस दिशा में सशक्त करना है कि प्रत्येक बच्चा प्रारंभिक कक्षाओं में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के कौशल प्राप्त कर सके।

गिलहरी
और गौरैया

टीएलपीएस 2025 के बारे में

टीएलपीएस 2025 द्वारा कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित के शिक्षण-अधिगम के तरीकों पर व्यापक स्तर के व्यवस्थित साक्ष्य प्रस्तुत किए गए हैं। यह सर्वे नवंबर 2024 से मार्च 2025 के बीच नौ राज्यों—असम, छत्तीसगढ़, हरियाणा, झारखण्ड, महाराष्ट्र, मेघालय, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश—में किया गया था। इसमें 21 जिले और 1,050 कक्षाएँ शामिल थीं। अलग-अलग शैक्षिक सन्दर्भों को शामिल करते हुए, टीएलपीएस बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) के लिए वर्तमान शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं की एक स्पष्ट और समग्र तस्वीर प्रस्तुत करता है।

टीएलपीएस 2025 लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के नेतृत्व में और टाटा ट्रस्ट के सहयोग से विभिन्न संस्थाओं के समूह द्वारा क्रियान्वित किया गया था। अध्ययन में शामिल संस्थाएँ हैं- सेंटर फॉर माइक्रो फाइनेंस (सीएमएफ), मधी फाउंडेशन, क्वालिटी एजुकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (क्वेस्ट), विक्रमशिला एजुकेशन रिसोर्स सोसाइटी और एजुकेशनल इनिशिएटिव्स (ईआई)।

टीएलपीएस 2025 रिपोर्ट में प्रस्तुत निष्कर्ष कक्षा में सीखने-सिखाने के माहौल, पाठ योजना और उसके प्रस्तुतिकरण, भाषा और गणित शिक्षण के लिए कुछ चुनी गई शिक्षण प्रक्रियाओं, तथा शिक्षक और बच्चों की विभिन्न गतिविधियों में लगने वाले समय का वर्णन और विश्लेषण करते हैं। यह रिपोर्ट एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के बारे में शिक्षकों की धारणाओं के बारे में भी बताती है। टीएलपीएस 2025 की सिफ़ारिशें यह बताती हैं कि कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। साथ ही ये भी अनुशंसा करती है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर कौन से सुधार किए जाने चाहिए, जिससे एफएलएन के दौरान शिक्षण-अधिगम के तरीकों में होने वाले बदलावों को संभव और स्थायी बनाया जा सके।

LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future.

www.languageandlearningfoundation.org
Language and Learning Foundation
@llf_ig
Language and Learning Foundation
LLF_edu
languageandlearningfoundation1193

TLPS 2025 के लिए प्रपत्र और कक्षा-वार डेटा तालिकाएँ ऊपर दिए गए QR कोड से प्राप्त की जा सकती हैं।